

# आत्मा और सच्चाई से प्रभु भोज

यीशु के अनुसार, परमेश्वर की आराधना में दो विशेष बातें अवश्य होनी चाहिए। अर्थात्, आराधना आत्मा से होनी चाहिए, और सच्चाई से भी होनी चाहिए। किसी काम को सच्चाई से करने का अर्थ है कि यह सच्चाई के अनुसार, अर्थात् परमेश्वर के वचन के अनुसार किया गया है (यूहन्ना 17:17)। “आत्मा से” का भाव मन के उचित व्यवहार या व्यक्त करने से है। ये सिद्धान्त जो कि उचित ढंग से किए जाने वाले सही कार्य हैं, आराधना के प्रत्येक कार्य में होने चाहिए। परन्तु, इस पाठ में हम उन्हें विशेष तौर पर आराधना के भाग अर्थात् प्रभु भोज पर लागू करेंगे।

## सच्चाई से

प्रभु भोज लेने के संबंध में प्रभु का वचन क्या सिखाता है ?

पहले, यह सिखाता है कि प्रभु भोज लिया जाना चाहिए। इस आत्मिक भोज का महत्व इस तथ्य में देखा जाता है कि इसकी आज्ञा प्रभु ने दी थी (मत्ती 26:26-29; मरकुस 14:22-25; लूका 22:14-20)। इसका आरम्भ उसके मन में हुआ। उसके मन से कभी भी कोई चीज ऐसी नहीं निकली जो अनावश्यक या महत्वहीन हो। यीशु के स्वर्गारोहण के बाद पौलुस को जो कि एक चुना हुआ प्रेरित था, प्रभु भोज के संबंध में निर्देश मिले थे (1 कुरिन्थियों 11)। लूका ने इस तथ्य को दर्ज किया कि आरम्भिक मसीही इसे लेते थे (प्रेरितों 2:42; 20:7)। परमेश्वर से प्रेम करने के लिए उसकी आज्ञाओं को मानना आवश्यक है (1 यूहन्ना 5:3)। क्या जो व्यक्ति प्रभु भोज नहीं खाता वह परमेश्वर से प्रेम करने का दावा करेगा ? क्या यह कहा जा सकता है कि प्रभु भोज में भाग न लेने वाला व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञा मानता है ? विश्वासी मसीही बनने के लिए, प्रभु भोज में भाग लेना आवश्यक है।

दूसरा, प्रभु भोज में भाग लेने वाला व्यक्ति इसे लेने के योग्य होना चाहिए। ग्रहण योग्य बनने के लिए प्रभु भोज को हर कोई नहीं खा सकता। इसके लिए हमारा योग्य होना आवश्यक है। इसे कौन खा सकता है ? यीशु ने अपने राज्य में मेज रखने का वायदा किया

था (लूका 22:29, 30)। फिर तो, उसका अर्थ है कि केवल राज्य के विश्वासी नागरिकों को ही इसे खाने का अधिकार है। राज्य में प्रवेश के लिए परिवर्तित होना आवश्यक है; अर्थात् जैसे कि एक अन्य आयत में बताया गया है, उसे नए सिरे से जन्म लेना आवश्यक है (मती 18:5; यूहन्ना 3:3-5)। नए नियम में परिवर्तन का नियम बड़े ही स्पष्ट ढंग से निर्धारित किया गया है (मती 28:19, 20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:46, 47; प्रेरितों 2:38)। जब कोई व्यक्ति इन शर्तों को पूरा कर लेता है, तो उसका नए सिरे से जन्म हो जाता है अर्थात् वह परिवर्तित हो जाता है और राज्य का नागरिक बन जाता है। राज्य में मिलने वाली आशिर्षों केवल राज्य के नागरिकों के लिए ही हैं।

इसके अलावा, यह भोज उचित समय पर खाया जाना आवश्यक है। आरम्भिक चले प्रभु भोज को सप्ताह के पहले दिन खाते थे (प्रेरितों 20:7)। इसलिए हमारे पास उस दिन इसे खाने का उदाहरण नए नियम में है। सप्ताह के इसी दिन प्रभु यीशु मुद्दों में से जी उठा था। इस कारण परमेश्वर ने इस दिन और यादगारी भोज को इकट्ठा कर दिया है। जो कुछ परमेश्वर ने जोड़ दिया है मनुष्य को उसे अलग करने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

प्रभु भोज को सच्चाई से, या सच्चाई के अनुसार सप्ताह के पहले दिन के बजाय “गुड फ्राइडे” या किसी दूसरे दिन नहीं लिया जा सकता। कहते हैं, “प्रभु का दिन, प्रभु भोज के बिना सुगन्ध रहित गुलाब, और शहद रहित उस छत्ते की तरह है जिसमें से सारी मिठास निकाल ली गई हो।”

जो कोई प्रभु भोज को ग्रहण योग्य ढंग से खाना चाहता है उसके लिए इसे लगातार खाना आवश्यक है। यह कितने अन्तराल के बाद किया जाना चाहिए? “सप्ताह के पहले दिन” लेने की अभिव्यक्ति इसके हर सप्ताह लेने को दर्शाती है। पुराने नियम में हमें “विश्राम दिन अर्थात् सब्त के दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखने” की आज्ञा का पता चलता है (निर्गमन 20:8)। इसमें यह नहीं कहा गया था कि “प्रत्येक सब्त,” परन्तु इसका अर्थ यही है कि प्रत्येक सब्त के दिन को पवित्र माना जाए। क्या “सप्ताह का पहला दिन” प्रभु भोज को प्रत्येक सप्ताह लेने का संकेत नहीं देता?

मनुष्य की दिलचस्पी विकल्प ढूंढने में ही रही है। नादाब और अबीहू को याद करें (लैव्यव्यवस्था 10), जिनकी आराधना बाहर की आग के विकल्प के कारण स्वीकार नहीं हुई। अन्ततः आज्ञा मानने से पहले नामान ने एक विकल्प सुझाया था और वह चंगा हो गया था (2 राजा 5)। फरीसी लोग परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं थे क्योंकि उन्होंने सच्चाई के स्थान पर मनुष्य की बहुत सी शिक्षाओं को जोड़ दिया था (मती 15:9)।

मनुष्य के विकल्पों पर प्रभु भोज सबसे अधिक प्रताड़ित हुआ है। कुछ लोगों ने रोटी और दाख रस के दूसरे विकल्प अपना लिए हैं! रोटी और दाख रस स्मृति चिह्न के रूप में परमेश्वर की ओर से मेज पर रखने के लिए दिए गए थे, और उनके विकल्प का इस्तेमाल नहीं होना चाहिए। कुछ लोगों ने दिन का विकल्प निकाल लिया है, वे सप्ताह के पहले दिन के बजाय प्रभु भोज किसी दूसरे दिन खाते हैं। बहुत से लोग प्रभु भोज हर सप्ताह खाना छोड़कर साल में एक बार, छह माह बाद या तीसरे माह लेने लगे हैं। दूसरे मामलों की तरह

ही, प्रभु भोज का विकल्प इसे विकृत करके इसका रूप बिगाड़ देता है। यह भोज “सच्चाई से” लिया जाना चाहिए। जब आराधना में विकल्प आ जाते हैं, तो सच्चाई निकल जाती है।

## आत्मा से

पहला कुरिन्थियों 11 मसीह की उस कलीसिया को लिखा गया था जिसके सदस्य इस पवित्र भोज का दुरुपयोग कर रहे थे। वे इसे गलत दिन पर नहीं खा रहे थे, न ही उन्होंने सप्ताह के पहले दिन के विकल्प के बिना कोई और विशेष दिन ढूँढ़ा था। परन्तु, वे इस भोज के महत्व को भूल गए थे। कुरिन्थियों के नाम अपने पत्र में, पौलुस ने इसे उचित ढंग से लेने का नियम बताया।

उसने कहा कि इसे लेने के लिए अपनी जांच करना आवश्यक है (पद 28)। हमें दूसरों की नहीं, बल्कि अपनी जांच करनी है। *प्रभु का भोज हमारे अंदर की ओर इशारा करता है।*

पौलुस ने कुरिन्थियों और हमें यह ध्यान रखने की चेतावनी दी कि प्रभु भोज किस प्रकार से खाया जाता है, क्योंकि उचित ढंग से खाकर प्रभु की मृत्यु का प्रचार किया जाता है (पद 26, 27)। हम यह भोज खाने से प्रचार करते हैं! आइये हम में से हर कोई यह ध्यान रखे कि इस भोज को “अनुचित” ढंग से न खाया जाए। आइये हम इसे परमेश्वर का भय रखकर बड़े आदर के साथ खाएं। कुछ लोग जो इसमें लापरवाही से भाग लेते हैं, उनका यह आचरण घृणित है। *प्रभु का भोज बाहर की ओर इशारा करता है* अर्थात् सावधानी से लेना चाहिए।

उस यादगारी भोज से जिसकी स्थापना मसीह ने की, हमारे मन पीछे की ओर जाने चाहिए। “मेरे स्मरण के लिए यही किया करो” (1 कुरिन्थियों 11:25)। हमारे मन कलवरी की त्रासदी की ओर पीछे जाने चाहिए। विश्वास की आंख से मसीही का मन उन सदियों में से होकर पहली शताब्दी में जाता है। यह देखता है कि मसीह हमारे पापों के लिए मर रहा है; *प्रभु का भोज पीछे की ओर इशारा करता है।*

पौलुस ने कहा कि रोटी खाने और कटोरे में से पीने से प्रभु की मृत्यु का प्रचार होता है “जब तक वह न आए” (1 कुरिन्थियों 11:26)। मसीही लोग प्रभु भोज में भाग लेकर मसीह के द्वितीय आगमन में अपने विश्वास का ऐलान करते हैं। ऐसा तब तक होता रहना चाहिए “जब तक वह न आए।” कहा जाता है कि कलीसिया को प्रत्येक सप्ताह प्रभु की मेज़ लगाने से एक ही घटना बन्द करवा सकती है और वह है प्रभु का आना! *प्रभु का भोज आगे की ओर इशारा करता है।*

## सारांश

कुरिन्थुस के बहुत से मसीही प्रभु भोज को अनुचित रीति से लेने के कारण निर्बल तथा रोगी थे। निस्संदेह, मसीह की देह के बहुत से अंग भी ऐसे हैं जो इसी कारण से आत्मिक कष्ट में हैं। आइये प्रभु भोज को सावधानीपूर्वक आत्मा और सच्चाई से लें।